हिन्दुस्थान रेकार्ड

मार्च १९४१ ई०

Hindusthan Records, March, 1941.

OSTAD GULAM ALI KHAN SAHEB.

Hindusthan Musical Products Ltd.

6-1, Akrur Dutt Lane : : Calcutta.

होली के

समय पर

सुनहरी

आवाज

वाले

मि० सहगलके

दो मनमोहन

रेकार्ड

Mr. Saigal.

Two ever green Holy Records.

H. 27	होरी हो ब्रजराज दुलारे - -	होरी चाचर
	झुलना झुलावो री - -	गन्धारी तिताला
H. 595	मैं जो दिनन को थोडी - -	होली
	जिन जाओरी गोरी - -	„

इन रेकार्डों के बगैर होलीका रंग

फीका रह जायेगा आज ही खरिद करलें।

हिन्दुस्थान रेकार्ड

मूल्य—प्रत्येक रेकर्ड २॥।)

मि० सहगल Mr. Saigal.

H. 885.	हमजोलियों की थी टोलियां	भाग १
	„ „ „	„ २

ओस्ताद गुलाम अली खाँ साहेब (लाहोर)

Ostad Gulam Ali Khan Sahib (Lahore)

H. 886	रुत बसंत में	(अड़ाने की बहार)
	बाजुबन्द खुल खुल जाय	भैरवीं

फिल्म कारपोरेशन रेकर्ड मूल्य दो रुपया चारआना

From the Film "Qaidi'

H. 884	दिलबहलता ही नहीं बहलायें क्या—	लैलाकागाना
	मोसाफिर कहां है तेरा देश—	अज़ीज़का गाना

श्पेशल लाल लेबिल वाले ताज १०" रेकर्ड मूल्य २।)

विलायेत बेगम अमृतसर वाली

Welait Begum (Amritsarwali)

H. 887	सीनेमें ख़लिश दिलमें तपिश	गज़ल
	आशिक़ी इमत्योज क्या जाने	„

मिस सुन्दर बाइ Miss Sundar Bai (Calcutta)

H. 888	बहआ-चल्ल नइहरवा बलम	भरतला शहनाइ के साथ
	मलिनियां खुब-बनी जैस गेंदे	(„)

प्रकाशित

हिन्दुस्थान म्यूजिकल प्रोडक्टस लि०

मार्च १९४१

मि० सहगल **Mr. Saigal**

H. 885 { हमजोलियों की थी टोलियां - (भाग १)
" " (" २)

इस मनोहर रेकार्ड पर होली की कहानी मि० सहगल की जबानी सुनिये होली जैसे खुशी के तेहवार पर आम तौर से सब लोग ख़ुशी नजर आते हैं मगर आपको इस संसार में बहुत ऐसे भी लोग मिलेंगे जिन के दिल ऐसी ख़ुशी के मौके पर भी ख़ुश नहीं यह रेकार्ड उसकी सच्ची तसवीर है।

(१)

हमजोलियों की थी टोलियां
वह कर रहीं थी ढढोलियां
कुछ मस्त थीं संगीत में
कुछ खेलती थीं होलियां

इक मैं हुं दुखिया जनम जली
ग़ममें हुई ग़ममें पली
ग़महो मेरा दमसाज़ था
ग़महो की थी शिक्षा मिली

चाहा के मैं भी इक जरा
देखूं के आखिर है यह क्या
क्युं खुश है सारी लड़कियां
पायो हैं क्या खोया हुआ

देखा तो सच्ची बात थी
सब की सोहाग की रात थी
अपने पिया को साथ ले
डाले वह हाथमें हाथ थीं

(२)

मसती में थीं सब झूमतीं
अपने पिया को चूमतीं
कभी देख दृष्टि से प्रेम की
आनन्द लेकर झुमतीं

कामात्र तब वह हो गई
खामोश होकर सो गई
जिसका पिया था साथ था
मद होश होकर खो गई

मैं हुं न मेरा है पिया—तड़पे हमेशा है जीया
देखा किसी को देख कर—बहला लिया अपना जिया
भगवन् करे ऐसा न हो—दुख हो मगर ऐसा न हो
जिस से पिया बैराग हो—ऐसा न हो ऐसा न हो

सहगलके गाने SAIGAL'S RECORDS

H. 862	मैं बैठी थी फुलवारीमें -	(१ला भाग)
	,, ,, ,, -	(२रा भाग)
H. 841	मारा बगमज़ा कुश्त -	(गज़ल फारसी)
	रंगी तर अज़ हिना अस्त -	(,, ,,)
H. 827	माही नाल जे आख लड़ दी -	(पंजाबी गज़ल)
	ओ सोहने साकिया, मेरी गली -	(,,)
H. 817	अपनी हस्तीका अगर -	(गज़ल 'बेदम')
	गर नहीं वस्ल तो - -	(गज़ल 'ग़ालिब')
H. 671	हर एक बातपे कहते हो - -	(गज़ल)
	वह आके ख्वाबमें - -	(,,)
H. 595	मैं जो दिननकी थोरी - -	(होली)
	जिन जावो री गोरी - -	(,,)
H. 550	शमाका जलना है - -	(गज़ल)
	रहमतपे तेरी मेरे - -	(,,)
H. 459	कौन बुझावे हो राम, तपत मोरे मनकी	(प्रेम-गीत)
	फिर मुझे दीदये तर याद आया -	(गज़ल)
H. 241	नुक्ता चीं है गमे दिल -	("यहूदीकी लड़की")
	यह तस्सरुफ अल्ला अल्ला -	(,,)
H 193	लाख सही अब पीकी बतियाँ -	(देस)
	लग गई चोट करेजवामें - -	(,,)
H. 156	दिन नीके बीते जाते हैं - -	(भजन)
	औसर बीतो जात - -	(विहाग)
H. 59	राधे रानी दे डारो न बाँसरी -	("पूरन भगत")
	भजूं मैं तो भावसे श्रीगिरिधारी -	(,,)
H. 27	झुलना झुलावो री अँबवाकी -	(गंधारी तिताला)
	होरी हो ब्रजराज-दुलारे -	(होरी-चाचर)
R.B. 5005	सुनो सुनो हे कृष्ण काला -	(कीतन)
	पंछी काहे होत उदास -	(भजन)
R.B. 5004	लाई हयात आये, कज़ा ले चली, चले	(ग़ज़ल)
	गर सियह बख्त ही होना था -	(,,)

उस्ताद .गुलाम अली खाँ साहब लाहौर

Ostad Gulam Ali Khan Saheb Lahore.

H 886	रुत बसन्त में अपने उमंग सों	(अड़ानेकी बहार)
	बाजू बन्द खुल-खुल जाये	(भैरवी)

लाहौरके प्रसिद्ध गायेक जनाब उस्ताद गुलाम अली खां साहेबको कौन नहीं जानता। खां साहेबने अपने कदरदान शौकीनों के ख्वाहिशपर चन्द शुध रागोंके रेकार्ड हमारी कम्पनीमें दिये हैं। जिनमें यह दो गाने इस महीनेमें जारी हुये हैं। आशा है कि संगीत प्रेमियोंमें यह रेकार्ड एक अनमोल तोहफ़ा समझा जायगा।

[१]

अस्थाई—रुत बसन्तमें अपनी उमंग सूं
पी ढूंढ़न निकसूं घर सूं
अन्तरा—मिले तो लाला पास बैठाउं।
पाग बधाउं पीली सरसूं।
रुत बसन्त में—

[२]

अस्थाई—बाजू बन्द खुल खुल जाय।
संवरिया ने जादू डारा।
अन्तरा—जादू की पुड़िया भर भर मारे
का रे करेगा बेद बेचारा।
बाजू बन्द खुल खुल जाय—

उस्ताद फ़ैयाज़ हुसेन खान (आफ़ताबे मौसीकी)

Ostad Fayaz Husain Khan Aftab-e-Mosiqi)

HH. 1	मैं कर आई पिया संग -	(पुरिया)
	मोरे मन्दिर अब लूं -	(जयजयन्ती)
H. 249	गरवा मै संग लाग -	(मीयाँकी टोड़ी)
	मनमोहन ब्रजको रसिया -	(परच)
H. 355	चलो काहेको झूठी बनाओ बतियाँ	(भैरवी)
	झनझन झनझन पायल बाजे -	(नटबिहाग)
H. 793	बन्दे नन्दकुमारम् - -	(काफ़ी
	फुलवनकी गेंदन मइका न मार -	(जौन पुरी)
H. 861	अलाप - -	(राग ललित)
	तड़पत हूं जैसे जल बिन मीन	(,, ,,)

अताहुसन खाँ साहब Ata Husain Khan Saheb

H. 871	उन संग लागी मोरी अखियां -	(रामकली)
	करसूं ले जाउं घड़वा -	(बहार)

उस्ताद इश्फ़ाक़ हुसैन खाँ साहब

Ostad Ishfaque Husain Khan Saheb

H. 870	सरस बेद जग सरस समन	(ख्यालमालीगौरी)
	डार डार बोलत हम रहियन	(,, सुगरई)

Film Corporation Record.

"कैदी" फिल्म के गाने From the film "Qaidi"

H. 884	दिल बहलता ही नहीं—लैला का गाना
	मोसाफिर कहां है तेरा देश—अजीजका गाना

नये सालकी फिल्मोंमें फिल्म कारपोरेशनके नये चित्र "कैदी" के शोहरत और कामयाबीका डंका तमाम हिन्दुस्तानमें बज रहा है। इस फिल्ममें गाने ऐसे मनोहर और दिलचस्प हैं जो बच्चे बच्चे की जबान पर हैं। उसी फिल्मके कुछ गाने जो खास खास थे। हिन्दुस्थान रेकार्डों पर जारी हुये हैं। एक रेकार्ड इससे पहिले निकल चुका है जो बहुत पसन्द किया गया है। अब यह दूसरा रेकार्ड इस महीनेमें जारी हुआ है सुनकर पूरा पूरा आनन्द लें।

पहली तरफ़

लैला का गाना

दिल बहलता ही नहीं बहलायें क्या।
क्या करें घबड़ा के हम मर जायें क्या॥
देखता है हमको हर एक घूर के।
इस भरी महफिलसे हम उठजायें क्या॥
ख्वाब है और दास्ताने देहर है।
निन्द आती है बहुत सो जायें क्या॥
हम तो कोशिश करते हैं "फजली बहुत।
दिल बहलता ही नहीं बहलायें क्या॥

दूसरी तरफ

अजीज का गाना

मुसाफिर कहां है तेरा देश।
रंजो मोहन की तंग गलीसे भाग बदलकर भेश
मुसाफिर कहां है तेरा देश।
दिलका शीशा नाजुक शीशा कहीं लगे न ठेस
मुसाफिर कहां है तेरा देश।

फिल्म कारपोरेशनका दुसरा रेकार्ड

H. 879. { कैसे हो छुटकारा, बाबू—कैदियोंका गाना
तू क्या जाने तू क्या जाने—सलमाका गाना }

[१]

कैसे हो छुटकारा, बाबू कैसे हो छुटकारा।
हम भी कैदी, तुम भी कैदी, कैदी है जग सारा ;
कैसे हो छुटकारा, बाबू, कैसे हो छुटकारा।
भारी चकिया कोई घुमाये, ताना बाना कोई लगाये ;
बैठा कोई खेल दिखाये, कोई लकड़ी बीनके लाये ;
कोई चलाये आरा,—कैसे हो छुटकारा।
परदेशी फिर देशमें आयें, उजड़ी नगरी मनुष बसायें ;
उठते बादल रुत पलटायें, घूरेके भा दिन फिर जायें ;
फिरे न भाग हमारा,—कैसे हो छुटकारा।

[२]

तू क्या जाने, तू क्या जाने, दुख-दर्दका सहना क्या जाने !
ओ चैनसे सोनेवाले, तू करवटका बदलना क्या जाने ;
ओ सोख तबीअत, मतवाले, मस्तीसे भरी आंखोंवाले ;
हंसनेको मेरे तू क्या समझे, रोनेको मेरे तू क्या जाने !
दिन-रात गवाही देते हैं, तू सूरज भी है, चांद भी है ;
अफसोस मगर तू शमा नहीं, परवानेका जलना क्या जाने !

फिल्म-रेकार्ड

"दिल हो तो है" के गाने :—

H. 756	पड़ी है नैया भँवरमें अपनी	- -
	पाँवमें रौंदा हमें	- - -

"रुक्मिणी" के गाने :—

H. 778	सूनी सूनी मैं थी	- - -
	कृष्णाकी बान न लाओ	- - -

"टारज़नकी बेटी" के गाने :—

H. 603	नजूमी, हाथ हमारा देख	(मणिका और अनुपम घटक)
	मूरख मन, अब रोता क्यों है	(,,)
H. 604	दुनिया है शतरंजकी बाजी	(,,)
	प्रेम-पुजारी आओ आओ	(,,)

"सुनहरा संसार" के गाने :—

H. 446	उस हरको मन भूल न जाना	- (मेनका और
	सुख आनन्द और प्रेमकी खातिर	- विनय गोस्वामी)

"पियाकी जोगिन" के गाने :—

H. 12018 W.R.	यह माना हमने बीमारे	- (सरदार अख्तर
	साक़ी हो, सहने बाग़हो,	- और ए० विश्वास)
H. 12019 W.R.	वाही देशमें मेरा जाना	- (हीरेन बोस)
	मन, प्रेमकी राख लगा ले	- (,,)

न्यु-थियेटर्स रेकार्ड

NEW THEATRES' RECORDS

"अधिकार" के गाने :—

H. 662	निराश मुसाफिर गाये जा	- (पंकज मल्लिक, पहाड़ी
	ऐशवालोंसे गरीबीकी	- और प्रताप मुखर्जी)
H. 663	इस जीवनकी फुलवारीमें	- (पहाड़ी सान्याल और
	कहाँ वो बचपनका प्यारा	- - पंकज मल्लिक)
H. 672	सुहागकी रात	- - (पहाड़ी सान्याल)
	बरखाकी रात	- - (,,)

"अनाथ-आश्रम" के गाने :—

H. 552	एक थी तोती	- (उमा, पहाड़ी और शब्बीर)
	मन, प्रेमकी जोत	- (,, ,, ,, ,,)

"करोड़पती" के गाने :—

H. 332	ओ दिलरुबा, कहाँ तक	- (सहगल और पहाड़ी)
	घिर कर आई बदरिया कारी	- (राजकुमारी)
H. 463	जो नौकरी दिला दे	- (सहगल और पहाड़ी)
	जगतमें प्रेम ही प्रेम	- - (सहगल)

"कारवाने हयात" के गाने :—

H. 265	कोई प्रीतकी रीत	- (सहगल, पहाड़ी आदि)
	हैरते नजारा आखिर	- - (सहगल)

"चण्डीदास" के गाने :—

H. 163	प्रेम-नगरमें बनाऊंगी घर मैं	- (उमा औ सहगल)
	तड़पत बीते दिन रैन	- (सहगल)
H. 164	मरूंगी मरूंगी सखी	- (उमा और पहाड़ी)
	बसन्त रुत आई आली	- (,, ,, ,,)
H. 264	प्रेमकी हो जय	- (उमा, सहगल और पहाड़ी)
	यह कूचके वक्त	- ('कारवाने हयात' में सहगल

"जवानीकी रीत" के गाने :—

H. 795 { मोहे उन विन ये जलसा - (कोरस)
दयालु जो कुछ है, दे डाल - (विनय गोस्वामी)

"ज़िन्दगी" के गाने :—

H. 792 { सो जा राजकुमारी, सो जा - (सहगल)
मैं क्या जानूं क्या जादू है - (,,)

H. 814 { जीवन-आशा ये है मेरी - - (सहगल)
दीवाना हूं दीवाना हूं - - (,,)

"दुश्मन" के गाने :—

H. 701 { करूं क्या आश निराश - (सहगल)
प्रीतमें है जीवन जोखों - (,,)

H. 718 { सितम थे जुल्म थे - - (सहगल)
प्यारी-प्यारी सूरतो - - (,,)

"देवदास" के गाने :—

H. 325 { बालम, आय बसो मोरे मनमें - (सहगल)
दुखके अब दिन बीतत नाहीं - (,,)

"धरती माता" के गान :—

H 650 { दुनिया रंग रंगीली बाबा - (पंकज, उमा और सहगल)
जागो सजनिया - - (उमा)

H. 652 { अब मैं काह करूं कित जाऊं - (सहगल)
मैं मनकी बात बताऊं - (सहगल और उमा)

H. 710 { किसने यह सब खेल रचाया - (सहगल)
आख़िर वह दिन आया - - (पंकज मल्लिक)

"धूप-छाँह" के गाने :—

H. 331 { प्रेम-कहानी सखि - (उमा और पहाड़ी)
प्रेमकी नैया - (,,)

H. 340 { प्रेम अपूरब माया - (उमा और सहगल)
अन्धेकी लाठी - (,,)

H. 417 { जीवनका सुख - (सहगल और पहाड़ी)
मूरख मन - (,,)

"पुजारिन" के गान :—

H. 529 { जो बीत चुकी सो बीत चुकी - (सहगल)
पीये जा, और पीये जा - - (,,)

"प्रेसिडेन्ट" के गाने :—

H. 488 { इक राजेका बेटा - - (सहगल)
प्रेमका है इस जगमें - - (,,)

H. 511 { इक बंगला बने - (सहगल और पंकज)
सुन्दर नारी प्रीतम प्यारी ('मंजिल' फिल्मसे)

"माया" के गाने :—

H. 462 { आज सखि आई - - (उमा)
गाये जा, गाये जा - - (पहाड़ी)

"विद्यापति" के गाने :—

H. 599 { एक बांसकी थी - - (पहाड़ी)
दर्शन हुए तिहारे - - (,,)

"स्ट्रीट सिंगार" के गाने :—

H. 697 { बाबुल, मोरा नइहर छूटो जाय - (सहगल)
जीवन-बीन मधुर न बाजे - (,,)

10" Red Label Taj Records Price Rs. 2/4/-

लाल लेबिलवाले १०" ताज रेकार्ड मूल्य २।)

वेलायत बेगम अमृतसरवाली Welait Begum Amritsarwali

H, 887 { सीनेमें ख़लिश दिलमें तपिश— ग़ज़ल
आशिकी इमत्याज क्या जाने— ,,

वेलायत बेगम अमृतसर वालीने यह दोनों सुन्दर ग़ज़लें अपनी सुरीली और मधुर आवाज़ में इस रेकोर्ड पर भरी हैं। दोनों ग़ज़लों की डायेरेक्शन पण्डित श्याम सुन्दर ने देकर और भी खूबी पैदा कर दी है। जैसे स्पेशल लेबिल का रेकार्ड है वैसे ही यह गाने भी अपनी खूबी में सब से अच्छे दिल पसन्द हैं। सुन कर हमारे वचन की परीक्षा करें।

(१)

सीने में ख़लिश दिलमें तपिश सोज़ जिगर में।
बैठा है तेरा तीरे नज़र कौन से घर में॥
आ जाओ तसौव्वर में अगर पर्दा नशीं हो।
आंखोंमें बिठा लूंगा छुपा लूंगा नज़र में॥
तुम उठके चले छा गई हर शै पर उदासी।
तुम आ गये तो आ गई रौनक़ मेरे घर में॥
क्या तेरी तवाज़ो करूं ऐ तीरे निगह नाज़।
इक ख़ून का क़तरा भी नहीं बाक़ी जिगर में॥
इक तुम हो गिरा बैठे मुझे अपनी नज़र से।
इक हम हैं तुम्हें रखते हैं हर वक्त. नज़र में॥
हंस हंस के नमक पाशियां करते हैं वह "अख़ज़र"।

और आग सुलगती है मेरे ज़ख़्मे जिगर में॥

(२)

आशिक़ी इमत्याजे क्या जाने।
फ़र्क़ नाज़ो न्याज़ क्या जाने॥
निगाहे शौक़ की है सब तहरीक।
हुस्न तमहीदे नाज़ क्या जाने॥
हम समझते हैं राज़ रामशो रंग।
ज़ाहिदे पाकबाज़ क्या जाने॥
नाख़ुने इश्क कितने टूट गये।
गिरहे नीम बाज क्या जाने॥
सच है सब नेको बद हमीं से हैं।
गर्दिशे चश्म नाज़ क्या जाने॥

सुन्दर बाई कलकत्ता Sunder Bai Calcutta.

H. 888. { बहुआ चलल नइहरवा - भरतला मय शहनाई
मलिनियां खूब बनी - ,, : ,,

बहुत दिनोंके बाद मिस सुन्दर बाई ने इस रेकार्ड पर दो हिन्दी गाने अपनी पार्टी के साथ गाया है, जिसकी तरजें और बोल सुननेके लायक हैं। शहनाई की संगतने तो और भी कमाल कर दिया है। गोया एक ही रेकाड में दो रेकार्डों का आनन्द है। गाना तो रेकार्ड खरीद कर सुनें और सहनाई मुफ़्त सुनें। आम के आम गुठलियोंके दाम वाला मिसाल इस रेकार्ड पर सच्ची उतरती है।

(१)

बहुआ चलल नइहरवा बलम सुसकी देके रोवे।
महलों में रोवे दो महलों में रोवे।
छज्जे पर सिर देइके मारे, बलम सुसकी देके रोवे॥
कोठे पे रोवे कोठरिया में रोवे।
चौकट पर सिर देइके मारे, बलम सुसकी देके रोवे॥
बागोंमें रोवे बगीचों में रोवे।
नेबुला पर सिर देइके मारे, बलम सुसकी देके रोवे।
सेजों पर रोवे सेजरियोंपर रोवे।
तकिये पर सिर देइके मारे, बलम सुसकी देके रोवे॥
बहुआ चलल नइहरवा बलम सुसकी देके रोवे।

(२)

मलिनियां खूब बनी जैसे गेंदे हज़ारे का फूल।
झंझरे का गड़वा गंगाजल पानी।
पानी पिलाने चली यार को, ज़रा लौण्डे को दे दो अफीम॥
सोनेकी थलिया में जीमना परोसी।
खाने खिलाने चली यार को, ज़रा लौण्डे को दे दो अफीम॥
लौंग इलायची का बिड़वा लगाया।
चाभने चभाने चली यार को ज़रा लौण्डे को दे दो अफीम॥
फुलवन चुन चुन सेज बिछाई।
सोने सोलाने चली यार को, ज़रा लौण्डे को दे दो अफीम॥
मलिनियां खूब बनी, जैसे गेंदे हजारे का फूल।
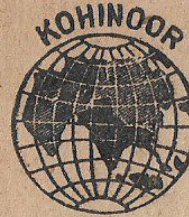
इस महीनेके नये कोहिनूर रेकार्ड

मूल्य प्रत्येक रेकार्ड २।)

महमूद हसन कव्वाल

Mahmood Hassan Quawal.

KLM. 154. { दुनियांमें हर बशर है दिवाना जिन्दगीका-क़व्वाली
हरएक तरहसे नाकाम पाके देख लिया - ,,

(१)

दुनियां में हर बशर है दिवाना जिन्दगी का।
मसती में झूमता हैं मसताना जिन्दगी का॥
कल का है क्या भरोसा कल पर न छोड़ नादां।
डर है छलक न जाये पैमाना जिन्दगी का॥
सर लेके जा रहा हूं मक़तल में आज कातिल।
शायद क़बूल कर ले नज़राना ज़िन्दगी का॥
ऐ शमा यह बता दे कब तक जला करूं मैं।
महफ़िल में पूछता है परवाना जिन्दगी का॥
किस फ़िक्र में तू बैठा क्या सुन रहा है जैदी।
अब खत्म हो चुका है अफ़साना जिन्दगी का॥

(२)

हर एक तरह से नाकाम पाके देख लिया।
किसी को क्या कहूं क्या क्या बनाके देख लिया॥
हवासो होश को मेरे मिटा के देख लिया।

जुनूने इश्क़में दर दर फिरा के देख लिया ॥
ग़रज़ फलकने मुझे आज़मा के देख लिया ।
न आया जीस्त में एक लहमा शादमानी का ।
दिया किसी ने भी कब साथ जिन्दगानी का ॥
हर हर्फ़ राज़ था इस ग़म ज़दह जवानी का ।
नतीजा निकला न कुछ भी मेरी कहानी का ॥
उन्हें भी क़िस्साये उलफत सुना के देख लिया ।
जहाने इश्क में इस तरह जिन्दगी काटी ॥
न चश्म तर की कमी और न आहे पैहम की ।
ग़रज़ के कोई खुशी भी न तुमने की पूरी ।
दिले हज़ीं की तमन्ना न कोइ भी निकली ॥
दिले हज़ीं को तुम्हारा बना के देख लिया ॥

बाइ चम्पा कमर (गोल्ड मेडलिस्ट)

Bai Champa Qamer (Gold Medalist)

KLM. 155
- दर्द दिलमें नम निगाहे नाज है - ग़ज़ल
- नालासा एक तालबे फरियाद आ गया - ,,

(१)

दर्द दिल में नम निगाहे नाज़ है ।
हुस्न में भी इश्क़ का अनदाज़ है ॥
खोल दीं आँखें मरीजे हिज्र ने ।
आप की आमद का ये एजाज़ है ॥

अब मेरी फरियाद नग़मा बन गई ।
सोज़ में भी इस ग़जब का साज़ है ॥
फिर तबीयत दौर उन पर आ गई ।
ये तबाही का मेरी आगाज़ है ॥

(२)

नाला सा एक ता लबे फरियाद आ गया ।
हम रो पड़े हैं क्यूं के कोइ याद आ गया ।
वह अहदे माज़ी और मैं एक बेवफा से प्यार ।
क्या यादकर रहा था मैं क्या याद आ गया ।
दौरे खेज़ा में फिक्र नशेमन रही मुझे ।
फसले बहार आई तो सइयाद आ गया ।
इस बे खुदीको क्या करू ऐ शिव्रने हज़ीं ।
खुद ग़ौर कर रहा हूं के क्या याद आ गया ॥

रशीद चाँद क़व्वाल Rasheed Chand Quawal.

KLM. 156
- आवारा फिरे कब तक ख़ाज़ा - मुनकबत
- मोकद्दरसे अगर अजमेरवाला -

(१)

आवारा फिरे कब तक ख़ाज़ा तेरा रोदाइ ।
जिस दिन से किया परदा सूरत भी न दिखलाइ ॥
अजमेर में बोलवाकर दीदारको तरसाया ।
क्या खाबमें भी मिलने की तुमने क़सम खाइ ॥

इतना तो करम कर दो दामन को मेरे भरदो।
खाली जो चला जाउं इसमें भी है रुसवाइ॥
आया रशीद अब तो खाली नहीं जायेगा।
लो जल्दी खबर उसकी ये भी तो है शैदाइ॥

(१)

मोक़द्दर से अगर अजमेर वाला यार हो जाता।
तो फिर गिर्दाबे ग़म से मेरा बेड़ा पार हो जाता॥
अगर वह मुझको मिल जाते तो वह रात दूर हो जाती।
मेरा दीवानापन जाते ही मैं होशियार हो जाता।
अगर यह मुझको मिलते सर झुका कर सिजदा कर लेता।
यही होता के मैं रुसवा सरे बाज़ार हो जाता॥
तसव्वरमें चले आते तुम्हारा क्या बिगड़ जाता।
तुम्हारा परदा रह जाता हमें दीदार हो जाता॥

महमूद हसन क़व्वाल

Mahmood Hassan Quawal.

KLM. 157. { पहुंचे जो सरे अर्श नबी - क़व्वाली
न मैं यूसुफ़ का तालिब हूं - ,, }

[१]

पहुंचे जो सरे अर्श नबी चश्म ज़दन में।
गुल नारये सल्लू का हुआ चरखे कोहन में॥

उम्मत तो तेरी याद में बेचैन थी लेकिन।
अल्लाह भी बेचैन रहा तेरी लगन में॥
सरदे के तिला बखशिशे उम्मत की खुदा से।
नाना का तफ़ाखुर है हुसैन और हसन में॥
फरियाद है फरियाद है या सैयदे जी जाह।
जोहरा का चमन लूट लिया शाम के बन में॥
प्यासे के चला हल्क़ पे जब खञ्जरे जालिम।
बे गोरो कफन लाश थी हसनैन की रन में॥

[२]

न मैं यूसुफ का तालिब हूं न मूसा का तमन्नाई।
न अब दरकार है मुझको मसीहा की मसीहाई।
न छेड़ो ऐ फरिस्तो मुझको हंगामे शकेबाई।
मिली है ख़ाक में मिलकर मुझे ये शामे तन्हाई।
मुझे सोने दो मरकद में मोहम्मद का हूं सौदाई।
ये माना इश्क लैला में तुझे हासिल हुई सोहरत।
ये माना इश्ककी दुनियां में है तेरी बहुत इज्जत।
नज़र अन्दाज कर सकता नहीं कोई तेरी अज़मत।
मगर ऐ कैस मेरे इश्क से हो तुझको क्या निसबत।
तू मजनु अपनी लैलाका मैं हूं अहमद का सौदाई।
गरीबां चाक आंखोंमें तजस्सुस क़लब था मुज़तर।
तमाशा देखती थी मेरी वहशतका 'सफे महशर।
मगर शेवन मुझे थी जुस्तजूये साकीये कौसर।

मुझे रोका जो जो रिज़्वांने तो रहमतने कहा बढ़ा कर।
इसे जाने दो जन्नत में ये है अहमद का सौदाई।

मोनीर खां और मशेरफ़ खां क़व्वाल देहली
Monir Khan & Mosharraf Khan Quawal Delhi

KLM. 158. { हरीमें नाज़ से जलवे चुराके - ख़मसा
इश्क कहते हैं जिसे वह - "

(१)

हरीमे नाज़ से जलवे चुरा के लाया हूं।
तमाम हुस्न की दुनिया पे छाके लाया हूं॥
हरएक आम नज़रसे बचा के लाया हूं।
निगाह में नहीं दिल में छुपा के लाया हूं॥
कमाल यह है के सब को देखा के लाया हूं।
मैं ही समझता हूं अशके अलम बहाने को।
मैं ही समझता हूं दुनियां के मुसकुराने को।
तमाम उम्र सुनाऊं अगर ज़माने को॥
समझ सकेगा न कोई मेरे फसाने को।
के दिल में राजे मोहव्वत छुपा के लाया हूं।
तलाश शोबने ख़ुद दार कर चुका था दिल।
मुझे भी इश्क़से बेज़ार कर चुका था दिल॥
जहाने शौक़ से बेकार कर चुका था दिल।
कदम उठाने से इनकार कर चुका था दिल।
तुम्हारी बज़्म में समझा बुझा के लाया हूं।

(२)

इश्क़ कहते हैं जिसे वह एक छिलकता जाम है॥
जिसको कहते हैं मोहब्बत मौत का पैग़ाम है॥
बेवफ़ाई का हसीनों के तो शोहरा आम है।
किस लिये बेताब तू इतना दिले ना काम है॥
सब्र करना जब्र सहना आशिकों का काम है।
देखने तुम मुझ मरीजे ग़म को किस दिन आओगे।
या यूं ही फुरकत में अपनी रात दिन तड़पाओगे।
आशिके जांबाज़ फिर ऐसा न कोई पाओगे॥
हां कफे अफसोस मल मल कर मगर पछताओगे।
मुझ से रौशन इस ज़मानेमें तुम्हारा नाम है॥
नामावर एहवाल गर पूछें मरीजे इश्क़ का।
कहना दो आँसू बहाकर मेरी जानिब से ज़रा॥
हाल कुछ अच्छा नज़र आता नज़र आता नहीं बीमार का।
देख आओ तुम भी एक दिन अपनी आँखों से ज़रा॥
आपके नाजुक का बस ये आख़री पैगाम है।

फरवरी १९४१ महीने के नये रेकार्ड

रानी कलावती · Rani Kalawati
फिल्म स्टार · FILM STAR

KLM. 150. { डरते नहीं संसार में हिन्दु तो किसी से -- गीत
सबसे सुन्दर प्यारा हिन्दुस्तान हमारा - गीत

रसीद चाँद कौवाल Rashid Chand Quawal.

KLM. 152. { दुलहन जाती है डोले में होकर सवार - कव्वाली
" " भाग २

बाई चम्पा कमर Bai Champa Qamar.

गोल्ड मेडलिस्ट Gold Medalist

KLM. 151. { तारीख में है यों लिखा भाग १
" " " २

KLM. 153. { अहमद की मुरलिया बाजे - कौवाली
तेरे सिजदे को रेहमान - नात

HINDUSTHAN

WELAIT BEGUM (Amritsar)

* फिल्म कारपारेशन रेकार्ड *

ब.दी फिल्म

के

गा

ने

हिन्दुस्थान रेकार्डों पर

रेकार्ड नं०

H. 879 & H. 884

Recorded & Released

by

HINDUSTHAN

MUSICAL PRODUCTS LIMITED

CALCUTTA.